शुक्र : सौन्दर्य की देवी, राक्षसों का गुरु

विश्व मोहन तिवारी

पृथ्वी तथा शुक्र सहोदर हैं अर्थात एक ही सौर निहारिका से निर्मित हुए हैं। शुक्र का व्यास (12100 कि.मी.), द्रव्यमान, घनत्व और आयु पृथ्वी के लगभग समान हैं। शुक्र सूर्य का दूसरा निकटतम ग्रह है। इसकी सूर्य से औसत दूरी 10.8 करोड कि.मी. है, और यह पृथ्वी का निकटतम साथी है (यद्यपि यह दूरी परिक्रमाओं के कारण बदलती रहती है)। इसकी सूर्य से दूरी पृथ्वी की सूर्य से दूरी का 73 प्रतिशत है, अर्थात 0.73 खगोल इकाई है।

हम जानते ही हैं कि सहोदरों के गुणों में अधिक समानता होना अनिवार्य नहीं है। शुक्र का सूर्य पश्चिम में उदय होता है और पूर्व में अस्त होता है! शुक्र की यह विचित्रता है कि इसका घूर्णन दक्षिणावर्त (घड़ी की दिशा में) है जबकि अधिकांश ग्रहों का वामावर्त (घड़ी की विपरीत दिशा में) है। इसके वर्ष में 224.7 (पृथ्वी के) दिन होते हैं, अर्थात इतने दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा करता है। शुक्र एक और मायने में भी बहुत विचित्र है - इसके दिन की लम्बाई इसके वर्ष की लम्बाई से बड़ी होती है, पृथ्वी के 243 दिन ! यह जानने में मज़ा आएगा कि विभिन्न ग्रह (शुक्र जैसी बहुत धीमी गति से लेकर बृहस्पति जैसी बहुत तेज़ गति के) विभिन्न गतियों से घूर्णन क्यों करते हैं। शुक्र के धीमे घूर्णन का एक परिणाम तो यह है कि इसमें चुम्बकत्व लगभग न के बराबर है।

इसमें समुद्र नहीं हैं, और पृथ्वी से 92 गुना घने वातावरण में गंधकाम्ल के छींटों सहित 96 प्रतिशत कार्बन डाईऑक्साइड है, जो शुक्र को जानलेवा ग्रीनहाउस बनाती है। इसीलिए इसकी सतह का औसत तापक्रम लगभग 480 डिग्री सेल्सियस होता है। यह सौर मंडल के ग्रहों में सर्वाधिक ऊष्ण पिण्ड है, बुध से भी अधिक। अंतरिक्ष यानों तथा रेडार दूरबीनों द्वारा इस 'जीव-शत्रु' ग्रह की जानकारी मिली है। सहोदर होते हुए भी पृथ्वी और शुक्र इतने भिन्न क्यों हैं? यह सब इसके कारणों की खोज करने वालों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

हमारे आकाश में चंद्रमा के बाद यह सबसे अधिक चमकने वाला पिण्ड है। बाहर से उजला और अन्दर से निष्प्रभ! इसकी सतह से आकाश मद्धिम धूमिल दिखाई देगा। इसके चमकने का कारण शायद इसके वातावरण में मौजूद 'मूर्खों के स्वर्ण' (लौह पाइराइट) के कण हैं। यह संध्या तथा उषा काल में ही दर्शन देता है। इसे सुबह और संध्या का तारा (वैसे ग्रह है) कहा जाता है। इसके सौन्दर्य से मोहित होकर रोमन लोगों ने इसका नाम सौन्दर्य और प्रेम की देवी 'वीनस' के नाम पर रख दिया। शुक्र की सतह ज्वालामुखियों, जीवित या सुप्त, से पटी पड़ी है, और मानना पड़ेगा कि हर चीज़ जो चमकती है, वह सोना नहीं होती! ***(स्रोत फीचर्स)***